भूमिका

भारत बहुभाषिक देश है। यहाँ विभिन्न भाषा परिवारों की भाषाएँ बोली जाती है। यही बहु-भाषिकता भारत के साहित्य और संस्कृति में विविधता और समृद्धि प्रदान करती है। भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा का क्षेत्र सबसे अधिक है। कन्नड़ भाषा कर्नाटक राज्य में बोली जाने वाली भाषा है और कर्नाटक की राजभाषा भी है। यह दक्षिण भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। आधुनिकता के आगमन के साथ ही भारतीय साहित्य में नाट्य चिंतन के विविध आयाम सामने आए हैं। स्वतंत्रता के बाद नाटकों में वैचारिकता का स्तर उभर कर सामने आया है। इस युग में नाट्य चिंतन को नए प्रतिमान मिले हैं। स्वतंत्रता के बाद हिंदी नाटकों में मोहन राकेश को प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में जाना जाता है और वहीं कन्नड़ भाषा में गिरीश करनाड का नाम प्रयोगधर्मी एवं पारंपरिक नाट्य-शैली के लिए प्रसिद्ध है। दोनों नाटककारों के नाटक, कथ्य और शिल्प के स्तर पर प्रयोगधर्मी नाटक रहे हैं। मोहन राकेश और गिरीश करनाड का नाट्य साहित्य बहुत विस्तृत है। मोहन राकेश हिंदी नाट्य साहित्य के तथा गिरीश करनाड कन्नड़ नाट्य साहित्य के दो बड़े नाम हैं। दोनों ही भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् उभरे नाटककार हैं। दोनों नाटककार भारतीय शास्त्रीय और लोकनाट्य परंपरा से जुड़े रहे हैं। इसका प्रभाव उनकी रचनाओं में दिखलाई पड़ता है। मोहन राकेश उत्तर भारत के श्रेष्ठ नाटककार हैं तो गिरीश करनाड दक्षिण भारत के। उत्तर और दक्षिण के होते हुए भी दोनों की ख्याति आधुनिक भारतीय रंगमंच के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एक जैसी रही है।

मोहन राकेश और गिरीश करनाड के अधिकतर नाटक भारतीय पुराण, इतिहास और मिथक आदि पर आधारित है। दोनों नाटककारों ने पुराण, इतिहास या मिथक के माध्यम से आधुनिक मानव के द्वंद्व और जटिलता, व्यक्ति और समाज तथा स्त्री-पुरुष के संबंधों को गहराई से जानने का प्रयास किया है। दोनों के नाटक स्त्री-पुरुष संबंधों की विडम्बना, तनाव और एक साथ जीने की विवशता को दर्शाते हैं। स्त्री-पुरुष संबंधों की त्रासदी दोनों नाटककारों के नाटकों में समान रूप से दिखाई देती है।

"`आधे अधूरे` और `हयवदन` नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन" इस शोध-प्रबंध में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध और विवाहेतर सम्बन्ध का ताना-बाना इन दोनों नाटकों में बारीकी से दिखाया गया है। यह दोनों नाटक मोहन राकेश और गिरीश करनाड के श्रेष्ठ नाटकों में से हैं। इस शोध-प्रबंध के माध्यम से स्त्री और पुरुष के सम्बन्धों का गहन अध्ययन किया गया है। `आधे अधूरे`और `हयवदन` नाटक आज के जीवन के गहन अनुभव खंड को व्यक्त करते

हैं। दोनों नाटकों में जीवन की गंभीरता को समझने का भरसक प्रयास किया गया है, साथ ही विवाहेतर सम्बन्धों को भी बारीकी से समझने का प्रयास किया गया है। स्त्री-पुरुष के आधे अधूरेपन की त्रासदी और उनके द्वंद्वपूर्ण सम्बन्धों की अबूझ पहेली है, `आधे अधूरे`और `हयवदन` यह दोनों नाटक आज हिंदी और कन्नड़ भाषा के नाटकों की एक धरोहर हैं।

तुलनात्मक साहित्य अध्ययन एक पद्धति होने के अतिरिक्त अब ज्ञानानुशासन का रूप ले चुका है। तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को लेकर सबसे बड़ी समस्या तुलनीय साहित्य की भाषाओं की विशेषज्ञता को लेकर है। केवल भाषा ज्ञान से साहित्यिक अध्ययन की योग्यता या समझ हासिल हो यह जरूरी नहीं है। आज तकनीक के इस युग में अनुवाद भी मूल भाषा के साथ-साथ हो रहा है। दोनों नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन इस आधार पर है कि दोनों नाटक की मूल संवेदना एक है। इन दोनों नाटकों के द्वारा उस परिवेश की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की भी तुलना की गई है। इसी कारण अलग-अलग भाषाओं की दोनों रचनाओं की पद्धति तुलनात्मक है। दोनों रचनाओं के सृजन में ज्यादा समय का अंतर नहीं है। जिस कारण कथ्य का विश्लेषण आसानी से किया जा सका है। इन रचनाओं का विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक रूप से अध्ययन किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध को मुख्य रूप से चार अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय `मोहन राकेश और गिरीश करनाड का जीवन और रचना संसार` पर केंद्रित है। इस अध्याय में दोनों रचनाकारों के संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही उनकी रचनाओं का परिचय देते हुए नाट्य रचनाओं का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। गिरीश करनाड के नाटक मूलतः कन्नड़ भाषा में होने के कारण सिर्फ उन्हीं नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया जा सका है जो हिंदी भाषा में अनूदित होकर उपलब्ध हो सके हैं।

इस लघु शोध-प्रबंध का द्वितीय अध्याय `नाट्य तत्त्वों के आधार पर `आधे अधूरे`और `हयवदन` नाटकों का विश्लेषण` पर केंद्रित है। नाटक के तत्व जैसे- कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल, भाषा-शैली, उद्देश्य और अभिनेयता के आधार पर इन दोनों नाटकों के तत्त्वों का विश्लेषण तुलनात्मक रूप से किया गया है। इन दोनों नाटकों के प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण का विशेष रूप से विश्लेषण किया गया है क्योंकि इन दोनों ही नाटकों में पात्रों में समानता अधिक है। इसके साथ ही इन दोनों नाटकों की भाषा-शैली और संवाद योजना पर विशेष रूप से अध्ययन किया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध का तृतीय अध्याय ``आधे अधूरे`और `हयवदन` नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन` पर केंद्रित है। इस अध्याय में दोनों नाटकों के कथानकों का तुलनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही इन नाटकों के पात्रों में अस्तित्व की तलाश को भी देखा गया है। `हयवदन` नाटक मिथकीय लोककथा पर आधारित है जिसके कारण इस नाटक की आधार भूमि को भी दर्शाया गया है। नाटकों के रचना शिल्प पर भी प्रकाश डाला गया है।

इस लघु शोध प्रबंध का चतुर्थ अध्याय ``आधे अधूरे`और `हयवदन` नाटकों की रंगमंचीयता एवं भाषा-शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन` पर केंद्रित है। मोहन राकेश और गिरीश करनाड की रंग-दृष्टि का आंकलन करते हुए इन दोनों नाटकों के रंगमंचीय-शिल्प और भाषा-शिल्प का अध्ययन किया गया है। मोहन राकेश और गिरीश करनाड ने आधुनिक रंगमंच को अखिल भारतीय स्तर पर समृद्ध किया है। जिसमें `आधे अधूरे`और `हयवदन` नाटक का महत्वपूर्ण योगदान है और इस योगदान को भी इस अध्याय में दर्शाया गया है।

इस लघु शोध-प्रबंध के चारों अध्याय मुख्य रूप से `आधे अधूरे` और `हयवदन` नाटकों पर ही आधारित हैं। इसके इतर मोहन राकेश और गिरीश करनाड के अन्य नाटकों का उल्लेख मात्र किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने में जिन लोगों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान रहा है में उनका आभार व्यक्त करता हूँ। सर्वप्रथम मैं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रति आभारी हूँ जिसने मुझे तुलनात्मक अध्ययन के मूल्यों, सिद्धांतों एवं सीमाओं से अवगत कराया, जिसके अंतर्गत रहकर यह लघु शोध-प्रबंध पूर्ण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह एवं अपने शोध निर्देशक डॉ. रामानुज अस्थाना का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध विषय की समझ एवं निरंतर अन्वेषणात्मक दृष्टि रखने में सहायता प्रदान की। मैं डॉ. सतीश पावड़े का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस लघु शोध-प्रबंध के विषय चुनाव में मेरी सहायता की।

मैं आभार प्रकट करता हूँ प्रो. सूरज पालीवाल, प्रो. प्रीति सागर, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. बीरपाल सिंह यादव और डॉ. रुपेश सिंह का जिन्होंने अध्ययन के समय विभिन्न मुद्दों पर अपनी वैज्ञानिक दृष्टि से विषयवस्तु की समझ के साथ-साथ भावनात्मक सहयोग दिया। मैं अपने आदरणीय गुरु प्रो. मदन मोहन भारद्वाज, डॉ. सुधीर प्रताप सिंह और हंसराज सुमन के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने सदैव मुझे अपना बहुमूल्य आशीर्वाद प्रदान किया और मेरे जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान की।

मैं जीवन के मूल स्रोत अपने माता-पिता और परिवार के प्रति आभारी हूँ जो जीवन की हर परिस्थिति में मेरे हाथों को थामे अपनी मौजूदगी का अनुभव कराते रहे। विशेष रूप से मैं अपने भाई संतोष कुमार और चंदन कुमार का ऋणी हूँ जो हर परिस्थिति में मेरे साथ खड़े रहे, मुझे सँभाला। मैं रेखा कुमारी, श्वेता मिश्रा, राजकुमारी और प्रीति सिंह का आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मानसिक उत्साह प्रदान किया।

मैं आभार प्रकट करता हूँ अपने अजीज मित्र कुमार गौरव मिश्र, राकेश कुमार, शाहिद अली, शेखर, मयंक, संदीप, रोशन, नीरज छिलवार, तरुण, रमन, काजल, विष्णु, विजय, आरुशी, श्वेता सचान, राहुल और देवेन्द्र नाथ त्रिपाठी का जिन्होंने अपने मित्रवत व्यवहार से मेरे जीवन में सदैव ईमानदारी, विश्वास और कर्तव्य निष्ठता दिखाई और मेरे इस लघु शोध-प्रबंध के निर्माण में सहयोग दिया। मैं आभार प्रकट करता हूँ संजीव झा, वरुण चौबे, शावेज़ खान, केते भाई, पूजा पवार व आशीष कुमार का जिन्होंने इस शोधकार्य को पूर्ण करने में मेरी यथासंभव सहायता की।

शोधार्थी

नरेन्द्र कुमार सिंह

एम. फिल. तुलनात्मक साहित्य